

ASHA ARCHIVES

1425

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः सगुरुं हृदि कर्मणि नित्यं च कर्तुं
विनये साक्षात् इति मूलं मन्त्रकर्म हितं वा
हनाद्योक्तं सैव नृत्तं नृत्तं किं वा वक्तुं विसर्तुं
जयतां काटिलिङ्गं गतां सायं नृत्तं धितं
थं नवयस विजयं पाठु नृत्तं नृत्तं ॥ १॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः पिबूजा प्राप्ते नव ग्रामे
नवद्वारे नव स्वधाम् ॥ वा दवधि यावत्त
यं वा ॐ स्वस्ति ॥ कर्म विविधं विचारवति जगत्
यत् जगत् काटिलिङ्गं कर्म कर्म जा न कया नाव

विसृज्य ॥ ॥ सनातनयातक ॥ सृज्यमानसुगं
गंद्यवयस्यनगंनव ॥ ध्यातितांगमीध्यातन
त्यनीथंरुजहं ॥ ॥ सग्ननसुन ॥ सग्नन
योगस्वाहा ॥ ॥ माहनिरुय ॥ ॥ रुविषा

माहनिद्विदिवा ॥ ॥ वरुथयनसुनचायसु
ॐपुथितयनशोचयिधानननृत्यनृत्य
जामिस्वाहा ॐमंस्वाहा ॥ ॥ सुद्धिकायावः
धमससंनय ॥ ॥ आयाहिस्वा ॥ मयाकवस्मान

उर्ऊदधात न महे न नायच क म आवसी व
त मात्र स न तस्य रा ज यत ह न तस्मान्नी गमा
मवात् उसमात्रिव मा तन ग। अ। य। ज न य
ध। च न ॐ ति वा। न री र व ॥ मा च। सा त क न।

धनया यु ॥ स चर्गि न्या स या य रा ॥ क न
वु मूल ॥ उं शु शु व स्व त त स वि शू व ल वि न्यी
उं य व स्य ध म हि ध यो ज न य वी द या त न।
ज उ। क्त स य त ज। छा व य ल य का व ली क

ॐ सततं विद्यामि विदु मरु ॐ ॥
 ॐ सः सतं विद्यामि ॐ ॐ ॐ ॥ ॐ मरुजा मि ॐ ॐ ॥
 दिक् ॐ अद्यामी कामना ध्याय ॐ ॥ स्थायक
 नृप ॥ ॐ त स सितवदा मि ॐ ॐ ॥
 नाहावा जय ॥ ॐ मरुजिन मरुग्य पि क सः ॥
 सः ॐ ॥ सनय ध्या ॥

१ वधिया वयनय	१ मावापान नय
१ सनानयातय	१ जवद सयत
१ दिग्गमनयूचनतय ३	१ आछाव मूल स
१ सग्ननशान	१ नयनय
१ माहनी स्थाय	१ माहनीनतिनय
१ यथ ध्याव नय गद्याय ॐ	१ कात्रल कन
१ स्रद्धिका याव ध्या सतय	

१ मा वा सात के
१ धम न या य
१ जू न न्या म
१ जे य या य
१ मरुत

१ पूजा विधि धून कडा पशु न वर

१ गाल आदि न घा ख
न दू य र्थ
१ क नू ल क्रिय
१ स के ता ख उा स सान
०० ति क नू ल विधि ॥

ॐ रसातु नमः त्वर्थं ददाति ॥ गुरु रिडा
ये यता य वन का न व न पका स वि आ दि
वन धून जे ज म व ज थू ति ॥

ॐ जप ॥ ॐ पशु पासा य विद म ह विष क म्मा यि धी
म दि त न्ना जी व पशो द या त् ॥

अथ आवग ॥ वं अहं ॥ सं ॥ कुं कुं किका किकां ॥
 वग्य वधय २ कुं २ कुं सं ॥ ७ हं नम ४ स्वाहा ॥
 पूर्व १००० ॥ ॥ धा १०८ ॥ ॥ लितय ॥ कि
 लि २ ॥

१ मता ननु ॥ ॐ किका आवग त्वरय वं २ चानय २ हं

४ अग्निस दूत विद्यमाल ॥

आम ॥ १०८ ॥ आममू ॥ धा १०८ ॥ नतानं गुगुमा
 सधूय ॥ ॥ मता ननु धूप ॥ विहान सिद्धि ॥ गुगु
 सिद्धा कस्तु कर्पू ठुन सि चानसं नू ग सि का ॥ ॥ नूग ॥
 साधन मलमास समराग वून या हा अनके ॥ स्वातक ॥
 १ गुगु कस्तु कर्पू का हं मलमास समराग वू

अग्निस तया २

अथ वन

नयादाउनक गुमिस नयाडा खातक ॥ ॥
खातक धूप ॥ महासांस ॥ कालहानयानगल ॥ तागुनिख
तिदुययानगल ॥ सिक्कास ॥ गुग्गुल ॥ धतसमशाग ॥ गुमि
सयूतविय ॥ नानक ॥ खायिडा ॥ कययामनुनजयभाल
॥ ॥

॥ श्री ३ नृपनाथयनमः ॥ कविमाखायाखेजग्यना
टव्यनयाक ॥ आय ॥ कनूलमानरुना ॥ दजयाक ॥ रूः
ननिक्कसर्न ॥ आखत ॥ दाखाखा ॥ नायधायवि
काउसाकाउनय ॥ मतवियक ॥ निमिकायमाः

ल ॥ सा स खि न व स गू न उ त य, सू वा ता, सि चि,
नू म हा उ रा उ ध क रू न क ॥ धू य, क र्पू न, सि
क्ता स, धू य न, सा तां उ ति न हा उ, पा न वि हा उ सा
हा उ त य, सू वा ता ल उ क्ता य ॥ धू य कू त क ॥ स न

सा न या न वि, आ ख त, दा रु ल खान ता य पा न वि हा
उ, ता ट ल न या क सा हा उ त य, धू जा ज य या य क
नू ल या म नू ली पा द वि या उ, क रू य ल कू त क
नू ल क्ता हा उ कू त क वा पि वा नि उ अ व ग्ध वा ॥

आदित्यवानकूकू, अलगतसिमास, पंचासुतस
 हितन, धूप, दीप, नेवद्य, पंचायवानधयूजा
 यादताथ, उगूनिद्रथडाताथ, पकूकूकू
 इथडाताथ, उगूनि, उगूनि, कायाताथ, उगूनि

गवक्रयवतावान २

वद्य, स्वान, अगत्रसि, सिक्तासनायकाडाया
 १ गलसमान, दडापूजायाय, उग्ययवताः
 यामेनुपूजासांगमवांगन, हातजावालजाक
 संयायाउनि, क्री १ मालसानियाहनयथुगु

वाहान १

विधूय स्वातकवचनसुतन मनस्ययादिजाना
पक्काहाउवालाउहावापमानवनसुतय
माल, हिमयगा, थउअनानिकायागुलि
विकायाउतयई ॥ मनुथ ॥ कथ्म २ कानवा

सावाकानविजनायुवनागनाहूँरुट् स्वाहा॥
धन१०८ अाकनंकुवम, धूर्यवियं॥ कायीति
युक्, स्वालीययक, थहाउंनय, ययूयवूध
य, अाकनंकुनकधूपवियमनुयउवाउ॥

स्वातन्त्र्यमननात्मानमनयायमनुन॥

ॐ श्रावणायस्तोत्रयवनवनवानयवानयद्वं
ह॥ श्रा॥ ४८ ॥ धार॥ १०८ ॥ श्रावणविद्या ॥ ॥
गुणलिख्यधन ॥

ॐ श्रावेशयस्तोत्रयवनवनवानय२ ह्वं कटू ॥
धार॥ १०८ ॥ गुणलिख्यधनं देव श्रावेशयाय ॥
ॐ श्राशानमष्टानि२ वन२ पंच२ दिन२ ह्वं ह्वं
ह्वं ॥ कण्ठजपयं ह्वं को ह्वं श्रावणविलंक ॥

ॐ ह ह ह वी न च छी कूँ कूँ कूँ रुद्र ॥ इत्यु नृक्षाय
कमनु ४॥

१. कृष्णसुवाचापि. कायाउ. कनूलाया धूयसंरा
गतस्य कनूलाशयउ ॥ कौचमशुनसा. थ्यगुहित

स्यं कं यद्गुण्यि अस्वातक ॥ नवमांसुधाय ॥ ॥
 एकप्रयक बहुर्दना कृद्गु. मिजनमृतकयाक
 त्रानिसठाठाठा गुं गुल्लमूखस इथ स्यंता (थ) स
 तिकृद्गुल्लानका अकाय थ गुल्लगुं गुलि स्वातक

यातकृत्वा मूर्धं मूमात्. सिद्धवस्तुक् ॥ ॥

॥ वृत्तं स्तान् ॥ ॥ काश्चाल स्तान् ॥ ॥ १० श्रुततजय

नयथवस्तु ॥ ॥ स्तान् न कनूत कनूत ॥ ॥ ॐ हं हं

॥ कनूत नूपमहादेव वायु स्तान् ॥ ॥ किं

सहिताय. श्रुततन २ श्रुततन २ स्तान् ॥ ॥ माद

स. नाटिकास. कनूतयत्. स्तान् १०८ ॥ ॥ ॐ हं हं

सं २ स्तान् नूपाय स्तान् ॥ ॥ जयन पाताल स्वतान

कं ॥ ॥ स्तान् नूपयत् ॥ ॥ ॥ विनोष ॥ ॥ ॐ हं हं

धूप॥ ता॥ गु॥ ता॥ नदि॥ ता॥ नसाक॥ ता॥ सगङ्गाय॥ ॥ दधुखचादिदि
ध॥ तसमसलनेधूप॥ ४॥

कं कूं कं कं नू ल नू य महारं न वाय कूं वें वा हू
न-धू कि सहि नाय कं क नू लं जू थ व ग न २
दाहि २ कू नू २ कूं कूं कूं नं रु रू वा हा कूं उं ॥
धन १०८ गंधारु ल अकत धम सु न ज य नः

२ अकत २१ दारु ल २१

पाव द व या क नं ॥ १०८ ॥ ध दारु ल अकत न
क नू ल कू च कं ॥ गंधी य न म ला ४॥ उं उां उां उूं
वां कूं २ रु रू २ दहि २ हा हा ॥ धन २१ ॥ ॥
धू दित क म नु ॥ उं व द २ कूं वा म्वा दि नि सों रु

ASHA ARCHIVES

511

1.425

ASHA ARCHIVES

ASNA ARCHIVES

513

1.425

ASNA ARCHIVES

श्रुतं चारुल २१ ॥ २१

ॐ ॐ ॐ ॐ स्वाहा वा धाम १० वा लं स्वयं प्रयत्नान् क
वा कं यन वा विना व म कु सु वां कुं न ३ आने हूं ३ ॐ
३ स्वाहा वा धाम २१ वा हूं २१ वा लं न वा ३ ॐ ३ हूं ३
वं ज आ व लं ना ह य हूं ३ ॐ ३ स्वाहा वा धाम

श्रुतं ज

ल स्वां ह जं ज प व य धाम १० ६ वा य व ह थि य क
त य ज ज प्र य ना ध स्वा न लि जा य हा ह य स्वा न
क क क क क वा वा स्वा ल न प्र या ज स्वा न क
क थ धू पा स क ह य ना वा धू य न द वा पा थ क क

म. सुखात्. लालिक्कि. सुसुत. कालासुत. कर्षूचम
हामांस. महिषमांस. धूयानगल. कूकूटयान
गल. बाधनसमरागवृत्तु दयकाउ. धूपासउ
पथधान १०८ ॥ ॥ युकावात्मनः ॥ खान के

दवयाकाष १

यान ॥ सुसुत. हि. स्याक. शूकनवन. प्रयूकाप्लः
का. नका. साधल. धनवृत्तुयाय ॥ धनधूयग
८४ ॥ ॥ बाल. सुलहा. कसूत. प्राखल. धन
शूतमधूय ॥ धनधूय ॥

(प्रातः सन्ध्या नमस्ते मूलमनुन शिवायुजा वा उँ जां प्रां कुँ :
 कोँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ कुँ
 किसे हिताय प्रवृत्त नर स्वाहा
 वा जय वा कह कल मलवन यडुँ स्वाः

हा ॥ धूपगल ॥ अरुन, प्राखल, नकि, गाल, कल
 न, यवयान, सयनाज, जटा, मी, सा, साखल, साग
 कनू, मनु, नजय, नपाव, कता, कता, सजय, धान
 १०८ ॥ नाय, क्का, दाव, जय, मनु, धान १०८ ॥

वीनयामनु॥॥ॐ क्रीं वां कुं क्रीं कुं हननुमला
 हेनवाय सदा निवायन म॥॥ॐ स्वाः
 हानुयलजयनपवीनयामनु नक्षत्रां
 ॥॥ॐ क्रीं कुं क्रीं कुं लीलमनसवृषिलोकन

लंभमय २ झूँज ४ रुट्ट रुट्टय २ आनू ॥ सक्कवा
 नजय १ ॥ लंखनानक ॥ कनू लभन ॥ ॥

१ॐ नमः २ नमः ३ स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥

ध्यान २१ ॥ ॥ आग कुरु २ स्वाहा ॥ कंयन नम
न ॥ ध्यान २१ ॥ लंख जय य ॥ ॥ कंयन धूय
महा ॥ ता १ स्वया, ता १ उय, ता १ सिद्धास, ता १
कर्पूर, ता १ मल्लिखान, महामांस ॥ समरा

ग ॥ ॥ अथ स्वातक्या विधि ॥ ॥ निश्चयवानसु अ
गवानसु तउ ॥ नानि स पूजायाय ॥ कंयया ज न पूजाया
ययक ॥ जयमानस्य ॥ अमूक नाटकस्य ॥ शेव वरुनः
वी आ वं ॥ कंयन ताय सिद्धि निमिर् ॥ विधि (अं) नृत्त

जौ अजिताये नमः ॥ १ ॥

जयाये नमः ॥ जौ विजयाये नमः ॥ जौ अयवाजिता
ये २ ॥ जौ नन्दाये २ ॥ जौ रुद्राये २ ॥ जौ जयाये २ ॥ जौः
शमाये २ ॥ जौ दिव्यागिन्धे २ ॥ जौ महायागिन्धे २ ॥ जौ
सिद्धियागिन्धे २ ॥ जौ गणेशाय २ ॥ जौ नाकिन्धे २ ॥

जौ कालनाथे २ ॥ जौ दुर्धक (धे) नमः ॥ जौ निष्पत्रः
थे २ ॥ जौ गंशनाथे नमः ॥ जौ धावाये २ ॥ जौ सुता
ये २ ॥ जौ यवनाथे २ ॥ जौ शिवलये २ ॥ जौ महानः
न्दाये २ ॥ जौ चाला मुखे २ ॥ जौ पिप्पविन्धे २ ॥ जौः

हसिन्धो २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥
रुद्र २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥
काये २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥
येनम २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥

मात २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥
यन्या २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥
॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥
॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥ ज्ञान्यदि २॥

२॥ जौ वीवरुदाये २॥ जौ मरुका काले २॥ जौ कं का
ले २॥ जौ विकृताननाये २॥ जौ काधनाये २॥ जौ
रामरुदाये २॥ जौ वायू वग्गुये २॥ जौ रुयाननाये
२॥ जौ वाक्काले २॥ जौ वेक्कये २॥ जौ यच्चिकाये

२॥ जौ लीव्यथे २॥ जौ वानाके २॥ जौ नावसिंके २॥
जौ निवाहले नमः ॥ ५४ ॥ मूल ॥ जौ ज वूँरुं नमः ३
खाहा ॥ धा ३ ॥ वलिविय ॥ आवाक ॥ मूडा ॥ धनमू
कतदाहा लधूर्यनार्य थिस्यं जयधं धा १०८ ॥ ऊया

वदवधियकं न ॥ धूय, दीय, नेवद्य, जय ॥ नन्दिम
हाकाल ॥ मूल ॥ कय मूल ॥ १०८ ॥ स्तुत ॥ खज्जुजा
हंसनी ॥ वासाक ॥ पुनू कययात दवजापयक ॥
वकनकाय ॥ वलिथय ॥ अकनकाखाजयातया

गु, दवस्कविहिनमडानककाय ॥ वस्तयमतव
॥ साकिथय ॥ आचार्यददवस्कसिन्धुस्वानकया
वकाय ॥ अखालडान ॥ दवस्कगियाअलियाय ॥
मताविश ॥ स्तुतगतिगियाय ॥ ॥ स्वातकतल

ठावमंत्रसरु कठुतकंगमनयय ॥ घाघल स्वः
हस्तुआदिनधूयरुय ॥ घाघलनंकावक ॥ हस्तुजी
नक ॥ नासिचक थमं नासिय ॥ न्यासयाचक ॥
कंयपाग ॥ ॐ ॥ अस्माय रुद्रादि ॥ चतुर्मुख

धूपधन ॥ ताउर्न ॥ निवस ॥ २१ नाटिका २१ द्रव
यस २१ ॥ खातकंगमतठावलिकाय मन्त्र ॥ आगच्छ
कु २ स्वाहा ॥ ॥ २१ लंखजयलर्यता नक ॥ कंय
नयाधूप ॥ ता १ स्वना ॥ ता १ गुगुलि ॥ ता १ सिक्कास

ता१ कर्पूर ॥ ता१ मलिखान ॥ महामांस ॥ धतस
मराग ॥ धतखातक विधि ॥ ॥ मताकवधूय ॥ म
१ कस्तुरी ॥ म१ कर्पूर ॥ म१ कूकूम ॥ म१ नील ॥ म१ श्र
खल ॥ म१ बाल ॥ म१ नकि ॥ म१ कूकूल ॥ ता१ धुतु

ता१ म१ साखल ॥ सोराखध्वनीया ॥ विष्णुसावरस ॥
धधूय ॥ सिद्धिमदतसा सिद्धिदय ॥ सोराखध्वनीया म
नुषजयलध ॥ १०८ ॥ ॥ ॐ कौं कौं ॥ खाल ॥ लाक
भाहनी मनु ॥ ॥ ॐ कौं कौं ॥ कौं कौं कौं यजमान
ॐ ॐ ॐ

(वै) ज हं २ सं २ कुं कृत्तिक जां २ आग कृ २ आ वंग य
 २ वध य २ जां २ कुं सं २ हं २ नमः १ स्वाहा ॥ आ वंग
 विद्या ॥ ॥ वै ज उं हं २ कर्तिष २ आ वंग मू २
 हं २ २ ॥ आ वंग मू च विद्या ॥ ॥ ॥ ॥

१०५ गन रस अकत दाखो खान नाय तया व नृत्त
 यवस्क तय विधि अ पूजा याय ॥ धूय दाय ने व अ
 जय म्नाय ॥ १०६ रस अकत दाखल क नूत मूल न
 जय ॥ १०७ ॥ क नूत याय क वक क नूत शय अ वध ॥ ॥
 क त्रि माखा या ख ज ग १ नाट व न स्क काय न का धूय धन क नूत शय ॥ ॥

॥ १४ ॥